संग्रहालय के कार्य

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant Professor (Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University, Patna

B.A.- III Year

Paper-VIII (Museum Method, Tourism and Excursion)

संग्रहालय एक सामाजिक संस्था है। पहले मात्र यह दुर्लभ वस्तुओं और पुरातन सामग्रियों का भंडार-गृह था। परन्तु आज इसकी महत्ता और बढ़ गई है। अब यह वास्तव में ज्ञान- केंद्र, वैचारिक, पृष्ठ-भूमि तथा नवीन रुचियों के केंद्र के रूप में पहचाना जाने लगा है। जिसके कारण इसके कार्य भी बढ गए है। संग्रहालय एक प्रकार से प्रदर्श सामग्रियों का केंद्र है। संग्रहालय में पुरातन और आधुनिक सामान्य रुचि और देश, काल तथा स्थान के व्यक्तित्व को निखारने वाली सामग्रियों को एक व्यवस्था में रखा जाता है। संग्रहालय के लिए भी भण्डार गृह होता है। लेकिन हम संग्रहालय को भण्डार गृह की तरह सामग्रियों से नही भर देते है। कहने का तात्पर्य है कि जो आकर्षक और उपयोगी सामग्रियाँ है उन्हें संग्रहालय कक्ष में सजा कर रखा जाता है और शेष सामग्रियों को भण्डार गृह में रखा जाता है। महत्वपूर्ण सामग्रियों को छाँट कर संग्रहालय कक्ष में या भण्डार गृह में रखते है। उनके संरक्षण की पूरी व्यवस्था की जाती है। तय किया जाता है कि सामग्री ठीक ठाक से सुरक्षित स्थान पर पहुँचे तथा

सामग्री सुरक्षित रहे तभी हम उसको प्रदर्शित करते है। सामग्री को इस तरह से प्रदर्शित किया जाता है जिससे दर्शक इसकी ओर आकृष्ट हो सके।

संग्रहालय से संबंधित आठ कार्य बताए गए है, जिनमे चार महत्वपूर्ण है :-

(1)प्राप्ति (Acquisition)

(2)पंजीयन (Registration)

(3)प्रदर्शन (Exhibition)

(4)प्रकाशन (Publication)

इनकी पूर्ति चार अन्य कार्यों से होती है जिसे संचालक (Curator) आवश्यक भागों में पूर्ण करते है :--

(1) संरक्षण (Preservation)

(2)वर्गीकृत प्रलेख (Cataloguing)

(3)सूचक कार्ड लगाना (Lebelling)

(4)शैक्षणिक क्रियाएँ (Educational Activities)

संग्रहालय क्रिया को सरल रूप से समझने तथा उसके महत्व के क्रम में आकलित करने पर हमें निम्नांकित कार्यो का ज्ञान प्राप्त होता है जो एक आधुनिक संग्रहालय में किया जाता है।

(1)सामग्रियों की प्राप्ति और संग्रह (Collection and Acquisition)

(2)प्रलेखन (Documentation)

(3)परिरक्षण(Conservation),संरक्षण (Preservation) और संरचनात्मक संरक्षण (Restoration)

(4)प्रदर्शन (Display)

(5)सूचक कार्ड लगाना (Lebelling)

(6)व्याख्या (Interpretation)

(7)शोध और प्रकाशन (Research and Publication)

(8)शैक्षणिक क्रियाएँ (Educational Activities)

(9)सेफ्टी

ऊपर क्रमागत रूप से बताया गया है कि आधुनिक संग्रहालय में कार्यों को किस ढंग से किया जाता है। हम देखते है कि इनमें पाँच क्रियाएँ प्रमुख है और शेष गौण है जिनमे प्रमुख कार्य वे है :--

(1)सामग्रियों के प्राप्ति और संग्रह

(2)प्रलेखन

(3)परिरक्षण

(4)प्रदर्शन

(5)व्याख्या

जब हम सामग्रियों की प्राप्ति कर लेंगे तो उसका हम पंजीयन करा लेंगे कि कहीं वह बाहर न बेच दिया जाए, तब वर्गीकरण करेंगे। उसके बाद संरक्षण उचित स्थान पर करेंगे। जहाँ लोग इसे देख सकेंगे। प्रदर्शन के साथ ही दर्शकों के सुविधा के लिए सूचक कार्ड तैयार किया जाएगा कि पढ़ा-लिखा दर्शक मात्र वस्तु को देख कर उसके विषय मे संक्षिप्त ज्ञान प्राप्त कर सके। इसे जनता तक पहुचाने के लिए इसका प्रकाशन भी करवाना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक संग्राहलयों को अपना कैटलॉग प्रकाशित करवाना चाहिए। इसके तुलनात्मक ज्ञान के लिए शोध क्रियाएँ भी की जाती है। जनता और विद्यार्थियों के हित मे सभाएँ आयोजित की जाती है जिससे इनके विषय में तथा अन्य सामग्रियों के विषय मे ज्ञान और प्राप्त हो सके। ऊपर दिए गए तरीके से ही आज के आधुनिक काल मे संग्रहालयों के कार्य किये जाते है। इन सभी व्यवस्थित माध्यमों से संग्राहलयों को और अधिक आकर्षक और ज्ञानवान बनाया जा सकता है।